

वकिसति राष्ट्र के लिये पूर्वी भारत का पुनरुद्धार

यह एडिटरियल 20/08/2024 को 'मटि' में प्रकाशित [“The eastern states have a big role in India's development aim”](#) लेख पर आधारित है। इसमें चर्चा की गई है कि भारत के पूर्वी राज्य अपनी क्षमता के बावजूद आर्थिक एवं सामाजिक विकास में पछिड़े हुए हैं। भारत के लिये वर्ष 2047 के अपने आर्थिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये इनके विकास में गति लाना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, जिसके लिये क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करने और सामाजिक-आर्थिक दशाओं में सुधार लाने के लिये तत्काल प्रयासों की आवश्यकता है।

प्रलमिस के लिये:

[आकांक्षी ज़िला कार्यक्रम, श्रम बल भागीदारी दर \(LFPR\), कौशल विकास, आयुष्मान भारत योजना, बजट 2024-25, अमृतसर कोलकाता औद्योगिक गलियारा, आंध्र प्रदेश पुनर्गठन अधिनियम, पोलावरम सचिवाई परियोजना, वशिखापत्तनम-वेन्नई औद्योगिक गलियारा, समावेशी विकास।](#)

मेन्स के लिये:

आर्थिक विकास में सरकारी नीतियों और हस्तक्षेपों का महत्त्व, संसाधनों का संग्रहण तथा क्षेत्रीय असमानता को दूर करना।

वर्ष 2047 तक वकिसति राष्ट्र बनने की दशा में भारत की यात्रा व्यापक रूप से इसके पूर्वी राज्यों के प्रदर्शन पर निर्भर करती है। **आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, बिहार और झारखंड** से मिलकर बनता यह क्षेत्र देश के आर्थिक आख्यान में एक महत्त्वपूर्ण मोड़ पर है। **‘बीटा-कंवर्जेंस’ (beta convergence)** की अवधारणा बताती है कि समय के साथ निर्धन क्षेत्रों को समृद्ध क्षेत्रों की तुलना में तेज़ी से विकास करना चाहिए। यह सिद्धांत भारत के पूर्वी राज्यों में अपेक्षा के अनुरूप साकार नहीं हुआ है। अपने समृद्ध खनजि संसाधनों, रणनीतिक अवस्थिति और विशाल संभावनाओं के बावजूद, ये राज्य ऐतिहासिक रूप से आर्थिक विकास में पछिड़े रहे हैं, जो भारत की विकास आकांक्षाओं के लिये एक चुनौती और अवसर दोनों प्रस्तुत करते हैं। यह **अपसरण (divergence) लक्षित हस्तक्षेप और नीतियों** की आवश्यकता को उजागर करता है।

चूँकि भारत वैश्विक आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है, इन **पूर्वी राज्यों का विकास करना अपरिहार्य** हो गया है। संतुलित राष्ट्रीय विकास और क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने के लिये इस भूभाग का आर्थिक उत्थान आवश्यक है। अपने विशाल कृषि आधार, खनजि संपदा और उभरती औद्योगिक क्षमता के साथ, पूर्वी राज्य देश के विकास पथ में महत्त्वपूर्ण योगदान देने के लिये तैयार हैं। हालाँकि, **गिरीबी, नमिन साक्षरता दर और अपर्याप्त अवसंरचना** जैसी लगातार बनी रही समस्याओं को दूर करना इस क्षमता को साकार करने के लिये आवश्यक है।

पूर्वी राज्यों के विकास को सीमति करने वाली प्रमुख चुनौतियाँ:

■ आर्थिक कारक:

- अवकिसति औद्योगिक क्षेत्र: इन राज्यों को मुख्य रूप से ऐतिहासिक उपेक्षा, नविश की कमी और अपर्याप्त अवसंरचना के कारण एक सुदृढ़ औद्योगिक आधार स्थापित करने के लिये संघर्ष करना पड़ा है।
 - इस अवकिसतिता के कारण औपचारिक क्षेत्र में **रोज़गार के अवसर** सीमति हो गए हैं और आर्थिक विविधीकरण अवरुद्ध हो गया है, जिसके कारण जनसंख्या का एक बड़ा भाग नमिन उत्पादकता वाले कृषि एवं **अनौपचारिक क्षेत्रों पर निर्भर** रहने को विवश है।
- **मालभाड़ा समीकरण नीति (Freight Equalisation Policy), 1952:** इसका उद्देश्य खनजि परिवहन लागत को सब्सिडी प्रदान कर भारत में कहीं भी कारखानों के निर्माण को प्रोत्साहित करना था।
 - इस नीति का भारत के पूर्वी राज्यों पर हानिकारक प्रभाव पड़ा, क्योंकि इससे खनन क्षेत्रों के निकट उद्योग स्थापित करने के लिये प्रोत्साहन कम हो गया। इससे **दूर-दराज के क्षेत्रों में कारखानों** के विकास को बढ़ावा मिला और इन राज्यों की आर्थिक संभावनाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।
- **नमिन सामाजिक प्रगत:** [सामाजिक प्रगति सूचकांक \(Social Progress Index- SPI\)](#) रैंकिंग से पता चलता है कि पूर्वी क्षेत्र का कोई भी राज्य सामाजिक प्रगत के उच्च स्तरों (टयि 1 और टयि 2) में स्थान नहीं रखता है।
 - **आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल और ओडिशा टयि 4 और 5** में शामिल हैं, जो नमिन-मध्यम एवं नमिन सामाजिक प्रगत को इंगति करता है।

- बहिर और झारखंड टयिर 6 में हैं, जो सामाजिक प्रगत में अत्यंत नमिन प्रदर्शन को इंगति करता है।

- **आकांक्षी ज़िले:** 112 आकांक्षी ज़िलों (Aspirational Districts) के विश्लेषण से पता चलता है कि बहिर और झारखंड के अधिकांश ज़िले देश भर के सबसे नचिले 20 ज़िलों में शामिल हैं।
 - ये नषिकर्ष इन राज्यों में वदियमान सामाजिक-आर्थिक कठनाइयों को उजागर करते हैं और पूरवी भूभाग के भीतर भी परयाप्त असमानताओं की पुष्टि करते हैं।
- **शरम बाज़ार संबंधी मुद्दे:** अधिकांश पूरवी राज्यों में वर्ष 2022-23 में 15-59 आयु वर्ग की आबादी के लिये शरम बल भागीदारी दर (LFPR) 60% से अधिक पाया गया।
 - इनमें बहिर का LFPR महज 50.9% पाया गया, जो नमिन शरम बल भागीदारी को इंगति करता है।
- **कार्यबल की गुणवत्ता:** इन राज्यों में 83% से अधिक कार्यबल अरद्ध-कुशल श्रेणी के हैं।
 - इससे पता चलता है कि नमिन-कुशल शरमकों की प्रधानता है, जो उत्पादकता और आर्थिक विकास को आगे बढ़ाने में कठनाई का सामना कर सकते हैं।
- **कृषिपर नरिभरता:** कृषि—जो प्रायः नमिन उत्पादकता और अभी भी पुरातन कृषिपद्धतियों के प्रयोग से ग्रस्त है, पर अत्यधिक नरिभरता ने इन राज्यों में आर्थिक विकास एवं आय स्थिरता में बाधा उत्पन्न की है।
 - जलवायु परिवर्तन एवं बाज़ार में उतार-चढ़ाव के प्रता कृषि क्षेत्र की संवेदनशीलता आर्थिक अस्थिरता को और बढ़ा देती है।
- **सामाजिक एवं मानव विकास संबंधी मुद्दे:**
 - **नमिन साक्षरता दर:** विशेष रूप से बहिर और झारखंड जैसे राज्यों में लगातार नमिन बनी रही साक्षरता दर ने कौशल विकास और कार्यबल गुणवत्ता में बाधा उत्पन्न की है।
 - इस शैक्षिक घाटे ने नमिन-कुशल शरम बल, नमिन उत्पादकता और सीमति आर्थिक अवसरों के एक दुष्चक्र का नरिमाण किया है।
 - **नीतिआयोग का SDG इंडिया इंडेक्स 2023-24:** 57 अंकों के साथ बहिर नमिनतम प्रदर्शनकरता राज्य रहा, जबकि 62 अंकों के साथ झारखंड दूसरे स्थान पर रहा।
 - **उच्च गरीबी दर:** लगातार बनी रही गरीबी ने सामाजिक गतशीलता और आर्थिक प्रगत में बाधा उत्पन्न की है।
 - उच्च गरीबी दर ने जनसंख्या के एक बड़े हस्से को नमिन शिक्षा, बदतर स्वास्थ्य और सीमति आर्थिक अवसरों के चक्र में फँसा रखा है, जहाँ पीढ़ीगत गरीबी (intergenerational poverty) से बाहर निकलना कठिन हो गया है।
- **ऐतहासिक एवं भौगोलिक कारक:**
 - **औपनिवेशिक वरिासत:** भारत के पूरवी राज्य शोषणकारी औपनिवेशिक नीतियों के स्थायी प्रभाव को अभी भी झेल रहे हैं, जसिने व्यवस्थिति रूप से उनके औद्योगिक विकास और आर्थिक प्रगत को अवरुद्ध कर दिया।
 - बरटिश शासन ने दीर्घकालिक विकास में नविश कयि बना इन क्षेत्रों से संसाधनों के नषिकर्षण पर ध्यान केंद्रति कयि, जसिसे आर्थिक पछिड़ेपन की नीव पड़ी, जो स्वतंत्रता के बाद भी लंबे समय तक बनी रही।
 - **भौगोलिक अलगाव:** इन राज्यों के कई क्षेत्रों की दुरगम अवस्थिति (जनिमें घने जंगल, पहाड़ी क्षेत्र और व्यापक नदी प्रणालियाँ शामिल हैं) के कारण संपर्क या कनेक्टिविटी की स्थिति खराब है।
 - इस भौगोलिक अलगाव ने बाज़ारों और संसाधनों तक पहुँच को व्यापक रूप से सीमति कयि है, जसिसे देश के अधिक विकसिति क्षेत्रों के साथ आर्थिक एकीकरण में बाधा उत्पन्न हुई है।
 - **प्राकृतिक आपदाओं के प्रता संवेदनशीलता:** पूरवी राज्य विशेष रूप से चक्रवात, बाढ़ और सूखे जैसी प्राकृतिक आपदाओं के प्रता अतसंवेदनशील हैं।
 - उदाहरण के लिये, पश्चिम बंगाल और ओडिशा राज्य नयिमति रूप से गंभीर चक्रवातों का सामना करते हैं (जैसे कि विरष 2020 में भयंकर चक्रवात अम्फान), जबकि बहिर प्रायः वनिाशकारी बाढ़ का सामना करता है।
 - इन बार-बार आने वाली आपदाओं ने विकास प्रयासों एवं आर्थिक गतिविधियों को लगातार बाधति कयि है अवसंरचना एवं आजीविका को क्षति पहुँचाई है और प्रगतशील विकास के बजाय नरितर पुनरनरिमाण की आवश्यकता उत्पन्न की है।

शासन एवं राजनीति संबंधी चुनौतियाँ:

- **राजनीतिक अस्थिरता:** सरकार और नीति-नरिदेशों में लगातार परिवर्तन ने इनमें से कई राज्यों में दीर्घकालिक विकास योजना को बाधति कयि है।
 - इस अस्थिरता के कारण असंगत नीतियों, परतियक्त परयोजनाओं और विकास प्रयासों में नरितरता के अभाव की स्थिति उत्पन्न हुई है।
- **प्रतसिपर्द्धी संघवाद:** प्रतसिपर्द्धी संघवाद (Competitive Federalism) मौजूदा असमानताओं को बढ़ाने के रूप में भारत के गरीब राज्यों के लिये हानिकारक सिद्ध हुआ है। बेहतर अवसंरचना और संसाधनों के साथ अमीर राज्य अधिक नविश एवं कुशल शरम को आकर्षति करने में सफल होते हैं, जसिसे गरीब राज्यों को प्रतसिपर्द्धा करने में संघर्ष करना पड़ता है।
 - इससे विकास अंतराल बढ़ता है, क्योंकि गरीब राज्यों को आवश्यक सेवाओं के वतितपोषण और आर्थिक अवसरों को आकर्षति करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
- **भ्रष्टाचार और नौकरशाही की अकुशलता:** व्यापक भ्रष्टाचार और प्रशासनिक अकुशलता ने विकास कार्यक्रमों के प्रभावी कार्यान्वयन में बाधा उत्पन्न की है।
 - इन समस्याओं ने लक्षति लाभार्थियों की ओर से संसाधनों का वचिलन कयि है, सार्वजनिक व्यय के प्रभाव को कम कर दिया है और नज्ी नविश को बाधति कयि है।
- **नक्सली वदिरोह:** पूरवी राज्यों के कुछ क्षेत्रों में नक्सली वदिरोह ने शासन और विकास प्रयासों को गंभीर रूप से बाधति कयि है।
 - इस जारी संघर्ष ने सुरक्षा संबंधी चुनौतियाँ पैदा की हैं, नविश को बाधति कयि है और विकास के बजाय सुरक्षा उपायों की ओर सरकारी संसाधनों का वचिलन कयि है।

पूर्वी राज्यों का वर्तमान आर्थिक परिदृश्य:

- **GDP अवलोकन:** पूर्वी क्षेत्र का संयुक्त [सकल घरेलू उत्पाद वर्ष 2022-23 में 579 बिलियन अमेरिकी डॉलर](#) तक पहुँच गया, जो वर्ष 2011-12 में **185 बिलियन अमेरिकी डॉलर** रहा था। इस अवधि के दौरान भारत के कुल GDP में इस भूभाग का योगदान लगभग **17%** पर गतहिंन बना रहा।
 - यह वृद्धि दर भारत को उसके विकास लक्ष्यों की ओर अग्रसर करने के लिये आवश्यक वृद्धि दर से कम है।
- **विकास अनुमान:** यदि पूर्वी क्षेत्र **9% की वार्षिक दर** से विकास करता है तो **वर्ष 2047 तक** इसका उत्पादन लगभग **5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर** तक पहुँच सकता है।
 - लेकिन यदि विकास दर **5% के नमिन स्तर पर बनी रहती है** तो **वर्ष 2047 तक** इसका सकल घरेलू उत्पाद केवल **1.8 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर तक** ही पहुँच पाएगा।
 - इससे इस भूभाग के विकास को राष्ट्रीय लक्ष्य से संरेखित करने के लिये तत्काल नीतितगत परिवर्तन की आवश्यकता पर प्रकाश पड़ता है।

पूर्वी राज्यों के विकास के लिये सरकार द्वारा कौन-से कदम उठाए गए हैं?

- **पूर्वोदय - पूर्वी क्षेत्र का विकास:** बजट 2024-25 में घोषित पूर्वोदय पहल का उद्देश्य पूर्वी राज्यों-**बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा और आंध्र प्रदेश** को नमिनलखित प्रयासों के माध्यम से राष्ट्र के 'विकास इंजन' में परिणत करना है:
 - **औद्योगिक विकास:** अमृतसर कोलकाता औद्योगिक गलियारे के अंतर्गत गया में एक औद्योगिक केंद्र का निर्माण किया जाएगा, जिसमें '**विकास भी - वरिसत भी**' के मॉडल के तहत सांस्कृतिक वरिसत को आधुनिक आर्थिक विकास के साथ संयुक्त किया जाएगा।
 - **सड़क संपर्क परियोजनाएँ:** भू-भाग में अवसंरचना की वृद्धि करने और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिये विभिन्न सड़क संपर्क परियोजनाएँ कार्यान्वित की जाएँगी।
 - इनमें **पटना-पूर्णिया एक्सप्रेस-वे, बक्सर-भागलपुर एक्सप्रेस-वे और बोधगया, राजगीर, वैशाली एवं दरभंगा** के लिये परिवहन संपर्क के निर्माण के साथ ही बक्सर में गंगा नदी पर एक अतिरिक्त 2-लेन पुल का निर्माण करना शामिल है।
 - **वदियुत एवं अवसंरचना परियोजनाएँ:** वदियुत परियोजनाओं पर वृहत निवेश किया जाएगा, जैसे कि बिहार के पीरपैती में 2400 मेगावाट के नए वदियुत संयंत्र की स्थापना।
 - अवसंरचना विकास संबंधी अन्य पहलों में बिहार में नए हवाई अड्डे, मेडिकल कॉलेज और खेल सुविधाएँ शामिल होंगी।
- **आंध्र प्रदेश पुनर्र्गठन अधिनियम:** सरकार आंध्र प्रदेश पुनर्र्गठन अधिनियम में उल्लिखित प्रतबिद्धताओं की पूर्ता के लिये प्रतबिद्ध है। **बजट 2024-25** में घोषित प्रमुख पहलों में शामिल हैं:
 - **बहुपक्षीय विकास एजेंसियों** के माध्यम से राजधानी के विकास के लिये विशेष वित्तीय सहायता, जो चालू वित्त वर्ष में **15,000 करोड़ रुपए** है।
 - किसानों को सहायता प्रदान करने तथा राज्य में **खाद्य सुरक्षा बढ़ाने** के लिये पोलावरम सचिवाई परियोजना को समय पर पूरा करने की प्रतबिद्धता।
 - **वशिखापत्तनम-चेन्नई औद्योगिक गलियारे** पर कोपपार्थी नोड और **हैदराबाद-बंगलुरु औद्योगिक गलियारे** पर ओरवाकल नोड के लिये अवसंरचनात्मक निवेश।
 - **रायलसीमा, प्रकाशम और उत्तरी तटीय आंध्र के पछिडे क्षेत्रों** के लिये अनुदान आवंटित किया गया है।
- **प्रधानमंत्री जनजातीय उन्नत ग्राम अभियान:**
 - इसका उद्देश्य जनजाति बहुल ग्रामों और **आकांक्षी जिलों में जनजातीय समुदायों** की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार करना है, जिसके दायरे में **63,000 से अधिक ग्राम और 5 करोड़ से अधिक जनजातीय लोग** शामिल होंगे।
 - यह योजना पूर्वी राज्यों की जनजातीय आबादी के सामाजिक-आर्थिक विकास को सुनिश्चित करेगी।
- **पूर्वी भारत में हरति क्रांति लाना (Bringing Green Revolution to Eastern India- BGREI):** यह **राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (RKVY)** की एक उप-योजना है और इसे असम, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा, पूर्वी उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल में कार्यान्वित किया जा रहा है।
 - यह कार्यक्रम किसानों को चावल एवं गेहूँ संबंधी प्रदर्शन (डेमो) आयोजन, बीज उत्पादन, पोषक तत्व एवं मृदा प्रबंधन, कीट नियंत्रण, प्रशिक्षण, कृषि भित्रीनरी, सचिवाई, स्थल-वशिषिट गतिविधियों और पोस्ट-हार्वेस्ट वपिणन के लिये सहायता प्रदान करता है।
- **ऊर्जा गंगा गैस पाइपलाइन परियोजना:** यह परियोजना बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल और ओडिशा के लोगों को स्वच्छ ईंधन उपलब्ध कराने के लिये प्रतबिद्ध है।
- **नक्सलवाद पर नयितरण: समाधान सदिधांत एवं पुनरवास नीति (SAMADHAN Doctrine and Rehabilitation Policy)** के प्रभावी कार्यान्वयन से वर्ष 2010 की तुलना में वर्ष 2022 में वामपंथी उग्रवाद से संबंधित हसिक घटनाओं की संख्या में **76%** कमी आई है।

पूर्वी राज्यों के विकास के लिये क्या रणनीतियाँ अपनाई जानी चाहिये?

- **आर्थिक विकास पहलें:** पूर्वी राज्यों को कनेक्टिविटी में सुधार और आर्थिक गतिविधियों की सुगमता के लिये अवसंरचना में लक्षित निवेश की आवश्यकता है। ऐसी नीतियाँ आवश्यक हैं, जो नजी क्षेत्र के निवेश को आकर्षित करे और औद्योगिकरण को बढ़ावा दे।
 - **ईस्टर्न डेवेलपमेंट फ्रेट कॉरिडोर (EDFC)** जैसी परियोजनाओं के माध्यम से कनेक्टिविटी बढ़ाने से माल की आवाजाही सुगम हो सकती है और परिवहन लागत में कमी आ सकती है, जिससे यह क्षेत्र औद्योगिक निवेश के लिये अधिक आकर्षक बन सकता है।
 - इसके अतिरिक्त, **खनजि संपदा से समृद्ध ओडिशा और झारखंड** जैसे राज्य मूल्यवर्द्धति उद्योगों (जैसे कि खनन क्षेत्रों के निकट इस्पात संयंत्र और रफाइनरियों स्थापित करना) को बढ़ावा देने वाली नीतियों से लाभान्वित हो सकते हैं।
- **सामाजिक विकास पर ध्यान देना:** पूर्वी राज्यों में कार्यबल की गुणवत्ता में सुधार के लिये व्यापक कौशल विकास कार्यक्रम महत्त्वपूर्ण हैं। इसके अलावा सामाजिक संकेतकों, विशेष रूप से स्वास्थ्य और शिक्षा संबंधी संकेतकों में सुधार के लिये पहलें की जानी चाहिये।

- बहिर और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में ऐसे कार्यक्रमों के सकारात्मक परिणाम देखने को मलि हैं, लेकिन यह सुनिश्चित करने के लिये और अधिक प्रयास किये जाने की आवश्यकता है कि **स्थानीय कार्यबल उभरते उद्योगों की मांगों** को पूरा कर सके।
- **स्वास्थ्य और शक्ति जैसे सामाजिक संकेतकों** में सुधार करना अत्यंत आवश्यक है। **आयुमान भारत** जैसी पहलों और सर्व शक्ति अभियान की पहुँच बढ़ाने से स्वास्थ्य एवं शक्ति संबंधी असमानताओं को दूर किया जा सकता है तथा सुनिश्चित किया जा सकता है कि आबादी स्वस्थ एवं सुशिक्षित हो।
- **श्रम बाज़ार में सुधार:** श्रम शक्ति में भागीदारी बढ़ाने के उपाय, विशेषकर महिलाओं के बीच, आवश्यक हैं। उद्यमिता और छोटे व्यवसायों को बढ़ावा देने से रोज़गार के अधिक अवसर पैदा हो सकते हैं।
 - उदाहरण के लिये, **पश्चिम बंगाल में AMFI-WB (Association of Microfinance Institutions in West Bengal)** की सहायता से सूक्ष्म-वित्त कार्यक्रमों के सफल कार्यान्वयन ने महिलाओं को छोटे व्यवसाय शुरू करने के लिये सशक्त बनाया है, जिससे परिवार की आय में सुधार हुआ है और वित्तीय स्वतंत्रता बढ़ी है।
 - **स्टार्ट-अप इंडिया जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से उद्यमशीलता** को प्रोत्साहित करना और छोटे व्यवसायों के लिये ऋण तक पहुँच प्रदान करना रोज़गार के वृहत अवसर उत्पन्न कर सकता है। यह **दृष्टिकोण बहिर जैसे राज्यों में प्रभावी सिद्ध** हुआ है, जहाँ लघु उद्योगों को समर्थन देने की पहल से महत्त्वपूर्ण रोज़गार सृजन हुआ है।
- **सहकारी संघवाद (Cooperative Federalism): केंद्र और राज्य सरकारों के बीच सहयोग को बढ़ावा देकर, क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करने के लिये संसाधनों** एवं विशेषज्ञता को अधिक प्रभावी ढंग से आवंटित किया जा सकता है।
 - यह दृष्टिकोण **नीति कार्यान्वयन, अवसंरचना विकास और सामाजिक-आर्थिक कार्यक्रमों** में साझा उत्तरदायित्वों को प्रोत्साहित करता है तथा यह सुनिश्चित करता है कि पूर्वी राज्यों को चुनौतियों पर काबू पाने के लिये आवश्यक समर्थन प्राप्त हो।
- **शासन और नीति:** विकास कार्यक्रमों के प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिये स्थानीय शासन संरचनाओं को सुदृढ़ करना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करने के लिये राज्य और केंद्र सरकारों के बीच सहयोगात्मक प्रयास आवश्यक हैं।
 - **कालिया योजना (Krushak Assistance for Livelihood and Income Augmentation- KALIA)** ओडिशा सरकार का एक कार्यक्रम है जो किसानों को उनकी कृषि का विस्तार करने, उनकी आय बढ़ाने और उनके ऋण को कम करने में सहायता प्रदान करता है।
 - इसी प्रकार, **पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा वर्ष 2013 में शुरू की गई कन्याश्री प्रकल्प योजना** आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि की बालिकाओं की शैक्षिक एवं आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने पर लक्षित एक प्रभावी नीति एवं सुशासन का उदाहरण है।
- **क्षेत्रीय असमानताओं को संबोधित करना:** पूर्वी क्षेत्र की राज्य सरकारों को क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करने और समतामूलक विकास को बढ़ावा देने के लिये अपने प्रयासों को तेज़ करना चाहिये। इसमें सामाजिक संकेतकों को बेहतर बनाने और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिये आवश्यक नीतियों को लागू करना शामिल है।
 - पूर्वी क्षेत्र की **राज्य सरकारों को ऐसी नीतियों को लागू** करने की आवश्यकता है जो समतामूलक विकास को बढ़ावा दें।
 - बहिर विकास मशिन के माध्यम से सामाजिक संकेतकों में सुधार के लिये बहिर सरकार के प्रयासों से शक्ति एवं स्वास्थ्य सेवा में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।
- **क्षमता को साकार करना:** पूर्वी राज्यों के पास विकास का इंजन बनने का अवसर है, जो देश को उसके लक्ष्यों की ओर आगे ले जाने में अहम भूमिका निभाएगा। उनके **विशाल खनजि संसाधन, रणनीतिक अवस्थिति और अब तक अपर्युक्त क्षमता** उन्हें भारत के आर्थिक रूपांतरण में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकने के लिये एक विशिष्ट स्थिति प्रदान करते हैं।
 - **पूर्वी राज्यों में भारत की आर्थिक वृद्धि** के महत्त्वपूर्ण चालक बनने की क्षमता है। झारखंड और ओडिशा के समृद्ध खनजि संसाधन इस्पात, एल्युमीनियम एवं सीमेंट जैसे उद्योगों के विकास के लिये अवसर प्रदान करते हैं, जो देश के औद्योगिक उत्पादन में योगदान कर सकते हैं।
- **MSMEs को बढ़ावा देना:** भारत के पूर्वी राज्यों में **MSMEs** को बढ़ावा देने के लिये वित्तपोषण एवं ऋण सुविधाओं तक पहुँच का विस्तार किया जाना चाहिये, साथ ही प्रौद्योगिकी और कौशल विकास के मामले में व्यापक समर्थन दिया जाना चाहिये।
 - इसके अतिरिक्त, **सुव्यवस्थित वनियमनों और बेहतर अवसंरचना के माध्यम से अनुकूल कारोबारी माहौल को बढ़ावा देने से इस भू-भाग में MSMEs विकास एवं संवहनीयता को और बढ़ावा मल्लिगा।**

नष्िकर्ष:

- भारत की विकास यात्रा में पूर्वी राज्यों के विकास को प्राथमिकता दी जानी चाहिये। उनके **विशाल प्राकृतिक संसाधन, रणनीतिक अवस्थिति और अपर्युक्त मानव क्षमता** उन्हें भारतीय अर्थव्यवस्था के नए विकास इंजन बन सकने की विशिष्ट स्थिति प्रदान करती है। पूर्वी राज्यों के समावेशी विकास को बढ़ावा देने, क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करने और इन राज्यों की अव्यक्त क्षमता को उन्मुक्त करने के रूप में भारत एक विकसित राष्ट्र बनने के लिये अधिक संतुलित एवं संवहनीय मार्ग सुनिश्चित कर सकेगा।
- पूर्वी राज्यों के लिये आने वाले दशक विकास की खाई को भरने और अपने विकास पथ को राष्ट्रीय उद्देश्यों के साथ संरेखित करने के लिये महत्त्वपूर्ण सिद्ध होंगे। उनकी सफलता भारत के भविष्य को आकार देने में सहायक सिद्ध होगी; इस प्रकार, पूर्वी राज्यों का विकास न केवल एक क्षेत्रीय आकांक्षा है, बल्कि विकसित राष्ट्र का दर्जा पाने की दशा में भारत की यात्रा की आधारशिला भी है।

अभ्यास प्रश्न: भारत के पूर्वी राज्यों के समक्ष विद्यमान प्रमुख विकास संबंधी चुनौतियाँ कौन-सी हैं? भारत के विकास हेतु उनकी क्षमता को साकार करने के लिये क्या उपाय किये जाने चाहिये?

??????????:

प्रश्न. भारतीय राज्य-व्यवस्था में, नमिनलखिति में से कौन-सी अनविर्य वशिषता है, जो यह दरशाती है कऱिसका स्वरूप संघीय है?

- (a) न्यायपालका की स्वतंत्रता सुरकषति है ।
- (b) संघ की वधायिका में संघटक इकाइयों के नरिवाचति प्रतनिधि होते हैं ।
- (c) केन्द्रीय मंत्रमिंडल में कषेत्रीय पार्टियों के नरिवाचति प्रतनिधि हो सकते हैं ।
- (d) मूल अधिकार न्यायालयों द्वारा प्रवर्तनीय हैं ।

उत्तर: (a)

??????????:

प्रश्न: हाल के वर्षों में सहकारी परसिंघवाद की संकल्पना पर अधिकाधिक बल दिया जाता रहा है । वदियमान संरचना में मौजूद असुवधियों के बारे में बताते हुए सहकारी परसिंघवाद कसि सीमा तक इन असुवधियों का हल नकाल लेगा, इस पर प्रकाश डालें । (2015)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/reviving-eastern-india-for-a-developed-nation>

